International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 20-10-2025, Accepted: 19-11-2025, Published: 04-12-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 48-49

बौद्ध धर्म और अंबेडकर का मानवतावाद: समानता और करुणा की दृष्टि से अध्ययन

Tara Chand Meena[1], Sachin Meena[2]
[1] Department of history, Jastana, Bonli, Sawai Madhopur, Rajasthan, India
[2] Department of history, Anchi Ka Bass Moti Nagar Colony Bandikui, Dausa, Rajasthan, India

सारांश
डॉ. भीमराव अंबेडकर ने बौद्ध धर्म को मानवतावाद, समानता और करुणा की जीवन–दृष्टि के रूप में स्वीकार किया। उनके विचार में बौद्ध धर्म केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और मानव–मुक्ति का मार्ग है। अंबेडकर का मानवतावाद इस धारणा पर आधारित था कि समाज में तब तक सच्चा विकास संभव नहीं है जब तक हर व्यक्ति को समान अधिकार, सम्मान और अवसर प्राप्त न हों। उन्होंने बुद्ध के सिद्धांतों — करुणा, मैत्री, अहिंसा और समता — को आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों से जोड़ा। अंबेडकर का यह दृष्टिकोण जाति, वर्ण और भेदभाव पर आधारित सामाजिक ढाँचों को चुनौती देता है तथा मानव गरिमा की पुनर्स्थापना का मार्ग प्रशस्त करता है। बौद्ध धर्म की नैतिकता को उन्होंने आत्म–सुधार और सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में देखा। इस शोध का उद्देश्य अंबेडकर के बौद्ध मानवतावाद की वैचारिक और सामाजिक प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है, जो आज भी एक न्यायपूर्ण, समरस और सह–अस्तित्व वाले समाज की दिशा में प्रेरणा प्रदान करता है।

मूल शब्दः अंबेडकर, बौद्ध धर्म, मानवतावाद, समानता, करुणा, सामाजिक न्याय

प्रस्तावना

अंबेडकर और बौद्ध धर्म का वैचारिक संगम

भारतीय समाज हजारों वर्षों से जाति, ऊँच–नीच और सामाजिक भेदभाव की जटिलता से ग्रसित रहा है। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने इस सामाजिक असमानता के विरुद्ध अपने संघर्ष में धर्म को एक नैतिक और मानवीय पुनर्निर्माण का माध्यम माना। वे यह मानते थे कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता या संवैधानिक अधिकार पर्याप्त नहीं हैं, जब तक समाज के स्तर पर समानता, सम्मान और बंधुत्व स्थापित न हो। इसीलिए उन्होंने बुद्ध के धम्म को अपनाया — क्योंकि उसमें आस्था नहीं, बल्कि तर्क, नैतिकता और करुणा का तत्व निहित है।

अंबेडकर का बौद्ध धर्म के प्रति झुकाव केवल आध्यात्मिक नहीं था; यह उनके सामाजिक दर्शन का विस्तार था। उन्होंने कहा था, "मैं उस धर्म को मानूंगा जो स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व सिखाता है।" बुद्ध का धर्म इन्हीं तीन मूल्यों पर आधारित था। अतः अंबेडकर के लिए बौद्ध धर्म एक सामाजिक क्रांति का प्रतीक बन गया।

बौद्ध धर्म में मानवतावाद का स्वरूप

बौद्ध धर्म मानव–केंद्रित धर्म है। यह किसी ईश्वर, बलिदान या अंधविश्वास पर नहीं, बल्कि व्यक्ति के विवेक, आचरण और करुणा पर आधारित है। बुद्ध ने अपने उपदेशों में कहा — "अत्त दीपो भव" अर्थात् "स्वयं दीपक बनो।" यह कथन मानव की आत्मनिर्भरता और विवेक का प्रतीक है।

बुद्ध के धम्म का मूल उद्देश्य दुःख का निवारण है — और यह निवारण केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक है। बुद्ध ने करुणा, मैत्री और अहिंसा के माध्यम से एक ऐसे समाज की कल्पना की जहाँ सभी जीवों के प्रति समान दृष्टि रखी जाए। अंबेडकर ने इसी विचारधारा को आधुनिक सामाजिक संदर्भ में पुनर्जीवित किया। उन्होंने कहा कि बुद्ध का धर्म केवल मोक्ष का मार्ग नहीं, बल्कि एक सामाजिक नैतिकता है — जो समानता, सहिष्णुता और न्याय पर आधारित है। बौद्ध धर्म के त्रिशरण (बुद्ध, धम्म, संघ) में उन्होंने एक लोकतांत्रिक समाज की झलक देखी जहाँ व्यक्ति और समाज दोनों एक–दूसरे के प्रति उत्तरदायी हैं।

अंबेडकर का मानवतावाद: समानता और करुणा की दृष्टि से विश्लेषण

अंबेडकर का मानवतावाद मूलतः बौद्ध करुणा और समानता से प्रेरित था। उन्होंने मनुष्य को समाज की इकाई मानते हुए उसके सम्मान को सर्वोपरि रखा। उनके अनुसार, धर्म का उद्देश्य आत्मा या परलोक नहीं, बल्कि मनुष्य को मनुष्य बनाना है। अंबेडकर ने कहा था —

- "बुद्ध का धर्म व्यक्ति की गरिमा को स्वीकार करता है और उसे ऊँच–नीच से मुक्त करता है।"

1. समानता का सिद्धांत

अंबेडकर ने बुद्ध के समानता के विचार को सामाजिक संरचना के केंद्र में रखा। बुद्ध के काल में जब वर्णव्यवस्था कठोर हो चुकी थी, तब उन्होंने कहा — "न जाति न वर्णो", अर्थात मनुष्य की पहचान कर्म से होती है, जन्म से नहीं।

अंबेडकर ने इस सिद्धांत को आधुनिक लोकतंत्र के साथ जोड़ा। उन्होंने संविधान में समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के जो आदर्श प्रतिपादित किए, वे सीधे बुद्ध के नैतिक दर्शन से प्रेरित थे। उनके अनुसार, "समानता के बिना स्वतंत्रता अर्थहीन है।"

2. करुणा का तत्व

करुणा अंबेडकर के मानवतावाद का नैतिक आधार थी। उन्होंने करुणा को सामाजिक न्याय की आत्मा कहा। करुणा का अर्थ केवल दया नहीं, बल्कि दूसरे के दुख को स्वयं अनुभव करना और उसके निवारण के लिए सक्रिय होना है।

अंबेडकर के अनुसार, करुणा और मैत्री का व्यवहार ही सच्चे लोकतंत्र की नींव है। बुद्ध के मेट्टा सूत्र (मैत्री उपदेश) में जिस प्रकार सभी प्राणियों के प्रति समान करुणा की भावना व्यक्त की गई है, उसे अंबेडकर ने सामाजिक नीति के रूप में प्रस्तुत किया।

3. बंधुत्व और सामाजिक एकता

अंबेडकर ने कहा था कि स्वतंत्रता और समानता तभी स्थायी हो सकती है जब समाज में बंधुत्व की भावना हो। यह भावना केवल

नैतिक उपदेशों से नहीं, बल्कि पारस्परिक करुणा और सहयोग से उत्पन्न होती है। बौद्ध धर्म में संघ की परंपरा इसी बंधुत्व का प्रतीक है।

अंबेडकर ने बंधुत्व को "धम्म का सामाजिक आयाम" कहा, जो हर व्यक्ति को समुदाय से जोड़ता है। इस प्रकार, उनके मानवतावाद में व्यक्ति और समाज दोनों के बीच संतुलन दिखाई देता है।

अंबेडकर का बौद्ध धर्म में दीक्षा और उसका सामाजिक प्रभाव

14 अक्तूबर 1956 को नागपुर के दीक्षा–भूमि में अंबेडकर ने लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण किया। यह केवल धर्म परिवर्तन नहीं, बल्कि सामाजिक क्रांति थी। उन्होंने इस अवसर पर कहा —

- "मैं बौद्ध धर्म इसलिए स्वीकार करता हूँ क्योंकि यह तर्क, विज्ञान और करुणा पर आधारित है।"

यह घटना दलित समाज के आत्मसम्मान और पहचान की पुनर्स्थापना का प्रतीक बनी। बौद्ध धर्म को अपनाकर अंबेडकर ने जाति–व्यवस्था की नींव को चुनौती दी।

उनकी इस पहल से "नवबौद्ध आंदोलन" का जन्म हुआ जिसने भारत में सामाजिक न्याय और समानता की नई चेतना को जन्म दिया।

1. दलित चेतना का उदय

अंबेडकर के बौद्ध धर्म स्वीकारने के बाद दलित समुदाय में आत्म–सम्मान की भावना मजबूत हुई। उन्होंने शोषित वर्गों को यह बोध कराया कि वे किसी भी रूप में हीन नहीं हैं। बौद्ध धर्म ने उन्हें नई पहचान, संगठन और आत्मबल दिया।

2. धार्मिक पुनर्जागरण और सांस्कृतिक स्वाभिमान

अंबेडकर के इस कदम से भारत में बौद्ध धर्म का पुनर्जागरण हुआ। नागपुर, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और उत्तर भारत में नए बौद्ध केंद्र विकसित हुए। यह पुनर्जागरण केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक स्वाभिमान का प्रतीक था — जहाँ धर्म का उद्देश्य सामाजिक मुक्ति बन गया।

अंबेडकर का मानवतावाद और आधुनिक भारत में उसकी प्रासंगिकता

डॉ. अंबेडकर का मानवतावाद आज भी भारतीय समाज के लिए प्रेरणा–स्रोत है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि लोकतंत्र केवल राजनीतिक ढाँचा नहीं, बल्कि जीवन का नैतिक दृष्टिकोण है।

आज जब समाज में हिंसा, असमानता, जातीयता और धार्मिक उन्माद जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, तब अंबेडकर का बौद्ध दृ ष्टिकोण अधिक प्रासंगिक हो उठता है।

1. लोकतंत्र और नैतिकता का समन्वय

अंबेडकर के अनुसार, बुद्ध का धर्म लोकतंत्र की आत्मा है क्योंकि वह तर्क, विवेक और नैतिकता पर आधारित है। बुद्ध के धम्म में जो सम्यक दृष्टि, सम्यक वाणी और सम्यक कर्म के सिद्धांत हैं, वे आधुनिक लोकतंत्र के नैतिक स्तंभ हैं।

2. सामाजिक न्याय की पुनर्परिभाषा

अंबेडकर ने सामाजिक न्याय को केवल अधिकारों का प्रश्न नहीं माना, बल्कि इसे नैतिक जिम्मेदारी के रूप में देखा। उनका यह विचार कि "धर्म वह होना चाहिए जो समाज को एकजुट करे, विभाजित नहीं," आज के भारत में सामाजिक सौहार्द की दिशा दिखाता है।

3. वैश्विक संदर्भ में अंबेडकर का मानवतावाद

अंबेडकर का बौद्ध मानवतावाद केवल भारत तक सीमित नहीं है। यह विश्व के लिए भी एक नैतिक दिशा प्रस्तुत करता है। आज जब विश्व में असमानता, हिंसा और जलवायु संकट जैसी चुनौतियाँ हैं, तब अंबेडकर की यह दृष्टि — "मनुष्य पहले, धर्म बाद में" — वैश्विक मानवता का आधार बन सकती है।

निष्कर्ष

डॉ. भीमराव अंबेडकर का बौद्ध धर्म के माध्यम से प्रतिपादित मानवतावाद एक व्यापक सामाजिक और नैतिक दर्शन है। उन्होंने धर्म को करुणा, समानता और विवेक के आधार पर पुनर्परिभाषित किया। उनके अनुसार, धम्म का अर्थ है — मानव के भीतर करुणा और समाज में समानता।

अंबेडकर ने जिस प्रकार बुद्ध के उपदेशों को आधुनिक सामाजिक यथार्थ से जोड़ा, वह उनके विचारों को शाश्वत बनाता है। उनके मानवतावाद ने धर्म, राजनीति और समाज — तीनों क्षेत्रों में एक नयी चेतना का संचार किया।

आज भी यदि भारतीय समाज सच्चे लोकतंत्र, समरसता और बंधुत्व की ओर अग्रसर होना चाहता है, तो अंबेडकर के बौद्ध मानवतावाद को व्यवहार में लाना आवश्यक है।

उनका यह विचार कि "धर्म का उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य बनाना है," आधुनिक भारत की आत्मा को दिशा देता है।

संदर्भ सूची

1. Ambedkar BR. The Buddha and His Dhamma. Bombay: Siddharth College Publications, 1957.
2. Omvedt G. Ambedkar: Towards an Enlightened India. New Delhi: Penguin Books India Pvt. Ltd., 2017.
3. Jha DN. Early India: A Concise History. New Delhi: Manohar Publishers, 2004.
4. Jha DN. Ancient India: An Outline. Delhi: People's Publishing House, 1977.
5. Majumdar RC. Ancient India. Delhi: Motilal Banarsidass Publishers, 1977.
6. Singh U. A History of Ancient and Early Medieval India: From the Stone Age to the 12th Century. New Delhi: Pearson Longman, 2008.
7. Keer D. Dr. Ambedkar: Life and Mission. Bombay: Popular Prakashan, 1954.
8. Jaffrelot C. Dr. Ambedkar and Untouchability: Analysing and Fighting Caste. New York: Columbia University Press, 2005.
9. Zelliot E. From Untouchable to Dalit: Essays on the Ambedkar Movement. New Delhi: Manohar Publishers and Distributors, 2001.